भारत के BFSI क्षेत्र का पुनरुद्धार

प्रिलिम्स के लिये:

भारतीय रिज़र्व बैंक, पूंजी निर्माण, सतत् विकास, वित्तीय समावेशन, बैंक निजीकरण, इक्विटी बाज़ार, कॉर्पोरेट बॉण्ड

मेन्स के लिये:

भारत में बैंकिंग, वित्तीय, सेवा और बीमा (BFSI) क्षेत्र की स्थिति, BFSI क्षेत्र से संबंधित चुनौतियाँ, भारत के BFSI क्षेत्र में चुनौतियों का समाधान करने के लिये उठाए जाने वाले कदम

स्रोत: द हिंदू

चर्चा में क्यों?

भारत के **बैंकिंग, वित्तीय, सेवा और बीमा (BFSI)** क्षेत्र को निरंतर **संरचनात्मक चुनौतियों** का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें **फ्रेगमेंट रेगुलेशन, शैलो कॉर्पोरेट बॉण्ड बाज़ार** और **अनियमित शैडो बैंकिंग** शामिल हैं, जो सतत् विकास के लिये वित्तीय प्रणाली को **मज़बूत और स्थिर करने** हेतु **व्यापक सुधारों** की आवश्यकता को उजागर करता है।

भारत के BFSI क्षेत्र की वर्तमान स्थिति क्या है?

- **विषय:** BFSI क्षेत्र से तात्पर्य **बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं और बीमा** से है, जो सामूहिक रूप से किसी देश के वित्तीय बुनियादी ढाँचे का आधार बनते हैं।
  - **इसमें बैंक, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ (NBFC), बीमा फर्म, म्यूचुअल फंड, पेंशन फंड** और **फिनटेक कंपनियाँ** जैसी संस्थाएँ शामिल हैं जो व्यक्तियों और व्यवसायों को वित्तीय उत्पाद एवं सेवाएँ प्रदान करती हैं।
- **भारत के BFSI क्षेत्र की स्थिति:**
  - **तीव्र विस्तार और क्षेत्र की बदलती गतिशीलता:** भारत के BFSI क्षेत्र में **बाज़ार पूंजीकरण में** 50 गुना वृद्धि देखी गई, जो **वर्ष 2005 में 1.8 ट्रिलियन रुपए से बढ़कर वर्ष 2025 में 91 ट्रिलियन रुपए** हो गया, जिसमें **लगभग 22% की CAGR** है।
    - जबकि **बैंक आधारभूत संरचना बने हुए हैं, कुल बाज़ार पूंजीकरण** में उनकी हिस्सेदारी **85%** से घटकर **57%** हो गई है, क्योंकि गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFC) और फिनटेक ने नवाचार और लक्षित वित्तीय समाधानों के माध्यम से अपनी स्थिति मज़बूत कर ली है।
  - **फिनटेक और NBFC का उदय: वर्ष 2015** से, फिनटेक क्षेत्र में **तेजी से वृद्धि** हुई है, अब इसका मूल्य **12 ट्रिलियन रुपए** से अधिक है।
    - इसके साथ ही, **NBFC ने भी काफी** विस्तार किया है, जिससे वंचित आबादी, विशेष रूप से **ग्रामीण और अनौपचारिक क्षेत्रों में, ऋण की कमी** को पूरा किया जा सका है, जिससे **वित्तीय समावेशन** में वृद्धि हुई है।
  - **वित्तीय मज़बूती:** निफ्टी-50 आय में **BFSI क्षेत्र का योगदान** (शेयर बाज़ार में सूचीबद्ध शीर्ष-50 कंपनियों की कुल आय में **BFSI** उद्योग में कंपनियों द्वारा अर्जित लाभ का हिस्सा) **वित्त वर्ष 2010 में 16% से बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में 33% हो गया,** जिसे **बेहतर परिसंपत्ति गुणवत्ता, मज़बूत ऋण मांग और कम प्रावधान** का समर्थन प्राप्त हुआ।
    - वित्त वर्ष 24 तक बैंकों की कुल संपत्ति 26 ट्रिलियन रुपए तथा **NBFC की 12.4 ट्रिलियन रुपए तक पहुँच** गई, जिससे इस क्षेत्र की मज़बूत हुआ।

भारत के BFSI क्षेत्र से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?

- **विनियामक ढाँचा: भारत का BFSI क्षेत्र खंडित विनियामक ढाँचे** के कारण चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिसमें **RBI, SEBI और IRDAI** जैसे विभिन्न नियामक विभिन्न खंडों की देखरेख करते हैं।
- इससे **क्षेत्राधिकारों में अतिव्यापन, विनियामक अंतराल और असंगत पर्यवेक्षण** उत्पन्न होता है, जिसके **परिणामस्वरूप वित्तीय संस्थाओं के**

लिए **अनुपालन जटिलताएँ** और परिचालन अक्षमताएँ उत्पन्न होती हैं।

- **RBI** [द्वारा](#) **नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) को द्वितीयक बॉण्ड बाज़ार** बनाने के निर्देश को नजरअंदाज कर दिया गया, क्योंकि **इक्विटी ट्रेडिंग से उच्च लाभ** मिलता है, अक्सर **अस्पष्ट एल्गोरिथम** रणनीतियों के माध्यम से, जिनकी जाँच की जाती है।
  - **अविकसित कॉर्पोरेट बॉण्ड बाज़ार:** भारत का कॉर्पोरेट बॉण्ड बाज़ार, तरल रहित और अपारदर्शी बना हुआ है, जिससे **पूंजी की लागत ऊँची** बनी हुई है, जिससे व्यापार व्यवहार्यता और आर्थिक विकास में बाधा आ रही है।
    - भारत का **घरेलू कॉर्पोरेट बॉण्ड बाज़ार,** जिसका मूल्य लगभग **64 ट्रिलियन** रुपए है, देश के नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद का केवल **18-20%** ही दर्शाता है।
- **स्वामित्व और UBO प्रकटीकरण में अस्पष्टता** भारत को **अंतिम लाभार्थी स्वामी (UBO)** के प्रभावी प्रकटीकरण की कमी के कारण **अपने वित्तीय बाज़ारों** में पूंजी प्रवाह और स्वामित्व की **पारदर्शिता सुनिश्चित** करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
  - **UBO प्रकटीकरण** के लिए वर्तमान सीमा (कंपनियों के लिए **10% और साझेदारी** के लिए 15%) **निवेशकों को रिपोर्टिंग** से बचने के लिए अपनी **होल्डिंग्स** को सीमा से थोड़ा नीचे रखने की अनुमति देती है।
    - निवेशक अक्सर **UBI नियमों** से बचने के लिए **प्रकटीकरण सीमा (जैसे, 9.9%) से थोड़ा नीचे अपनी हिस्सेदारी** रखते हैं, जिससे **सेबी की वास्तविक निगरानी** का पता लगाने की क्षमता में बाधा उत्पन्न होती है।
  - कुछ **विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (FPI) विस्तृत स्वामित्व डेटा साझा** करने का विरोध करते हैं, जिससे सेबी की निगरानी कमज़ोर होती है। भारत की [**वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (FATF)**](#) प्रतिबद्धताओं के बावजूद, **खराब कार्यान्वयन प्रवर्तन**, पारदर्शिता और निवेशक विश्वास को बाधित करता है।
- **बीमा की कमज़ोर पहुँच:** बढ़ती जागरूकता के बावजूद, **भारत में बीमा की पहुँच वैश्विक** मानकों के हिसाब से कम है। वर्ष 2023 तक, यह **सकल घरेलू उत्पाद का सिर्फ 4.2%** था, जो सीमित कवरेज और वित्तीय सुरक्षा जाल के रूप में **बीमा के कम उपयोग** को दर्शाता है।
- **गैर-निष्पादित परिसंपत्तियाँ (NPA):** हाल ही में गिरावट के बावजूद, [**गैर-निष्पादित परिसंपत्तियाँ**](#) भारतीय बैंकों, विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए एक प्रमुख चुनौती बनी हुई हैं। **खराब ऋणों का उच्च स्तर** उत्पादक क्षेत्रों को ऋण देने की उनकी क्षमता को बाधित करता है।
  - **दिवाला एवं शोधन अक्षमता संहिता (IBC)** और **बैंक पुनर्पूंजीकरण** जैसे उपाय किये गए हैं, फिर भी NPA अनुपात **बैंकिंग प्रणाली** की समग्र दक्षता तथा स्थिरता को प्रभावित कर रहा है।
- **शैडो बैंकिंग जोखिम:** शैडो बैंकिंग (जहाँ **NBFC, मार्जिन ऋणदाता और व्यापक विनियमन के बिना बैंकिंग जैसी सेवाएँ** प्रदान करते हैं), **भारत की वित्तीय स्थिरता के लिये** एक महत्त्वपूर्ण खतरा है।
  - खुदरा निवेशकों को अक्सर **मार्जिन ऋण** पर **उच्च ब्याज दर (20% से अधिक) चुकानी पड़ती** है, क्योंकि ब्रोकर निवेशक के स्वयं के धन को वापस उधार देते हैं और पूरी राशि पर ब्याज लेते हैं।
  - इस तरह के अनियमित ऋण का स्तर नियामकों के लिये अस्पष्ट बना हुआ है, जिससे **वित्तीय स्थिरता** के बारे में चिंताएँ बढ़ रही हैं, जो अनियमित डेरिवेटिव के कारण उत्पन्न **वर्ष 2008** के वैश्विक वित्तीय संकट के समान है।
- **साइबर सुरक्षा खतरा: BFSI** क्षेत्र में डिजिटल अपनाने की बढ़ती प्रवृत्ति के साथ, साइबर सुरक्षा **जोखिम** भी बढ़ गए हैं। **ऑनलाइन बैंकिंग और डिजिटल भुगतान** में वृद्धि ने डेटा उल्लंघन, धोखाधड़ी और साइबर हमलों की भेद्यता बढ़ा दी है।
  - साइबर सुरक्षा फर्म कैस्परस्काई ने **वर्ष 2024** में **भारत के वित्तीय क्षेत्र** को लक्षित करते हुए **1.35 लाख से अधिक फिशिंग हमलों** की सूचना दी थी।

भारत में वित्तीय क्षेत्र सुधार से संबंधित प्रमुख समितियाँ कौन-सी हैं?

क्षेत्र	समिति	मुख्य फोकस
बैंकिंग सुधार	नरसिंहम समिति	बैंकिंग क्षेत्र सुधार, परिसंपत्ति पुनर्निर्माण
वित्तीय क्षेत्र में सुधार	रघुराम राजन समिति	समग्र वित्तीय क्षेत्र सुधार
बैंक लाइसेंसिंग	बिमल जालान समिति	नये बैंक लाइसेंस
NBFC विनियमन	ए.सी. शाह समिति	NBFC का विनियमन
सहकारी वित्त	आरएन मिर्धा समिति	सहकारी समितियाँ
	मराठे समिति	शहरी सहकारी बैंकों को लाइसेंस देना
बैंकिंग प्रौद्योगिकी	रंगराजन समिति	बैंकों का कम्प्यूटरीकरण
NPA और ऋण संबंधी मुद्दे	खन्ना समिति	गैर-निष्पादित परिसंपत्तियाँ (NPA)
	एस.एस. कोहली समिति	जानबूझकर चूक करने वाले
वित्तीय समावेशन	नचिकेत मोर समिति	भुगतान बैंक
	एच.आर. खान समिति	बिज़नेस कॉरेस्पोंडेंट (BC) मॉडल
ग्रामीण एवं प्राथमिकता क्षेत्र बैंकिंग	एम.एल. दांतवाला समिति	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RBI)
	गाडगिल समिति	अग्रणी बैंकिंग योजना
पूंजी बाजार और निवेश	सोढानी समिति	विदेशी मुद्रा एवं NRI निवेश
	वाई.वी. रेड्डी समिति	लघु बचत सुधार

भारत के BFSI क्षेत्र में सुधार के लिये क्या उपाय लागू किये जा सकते हैं?

- **गहन बॉण्ड बाज़ार का विकास:** भारत का कॉर्पोरेट **बॉण्ड बाज़ार** सकल घरेलू उत्पाद का मात्र **18-20% है, जो दक्षिण कोरिया (80%) और चीन (36%)** जैसे देशों से काफी पीछे है।
  - **इस बाज़ार को मज़बूत** करने से ऋण लेने की लागत कम हो सकती है, **दीर्घकालिक पूंजी तक पहुँच में सुधार** हो सकता है तथा **औद्योगिक विकास और रोज़गार को** समर्थन मिल सकता है।
- **KYC और UBO मानदंडों को मज़बूत करना: वित्तीय निवेशों के स्वामित्व और नियंत्रण पर सटीक और सुलभ डेटा** सुनिश्चित

करना। **SEBI** द्वारा **सख्त KYC और अंतिम लाभकारी स्वामित्व (UBO) अनुपालन** लागू करने से दुरुपयोग पर अंकुश लगेगा, पारदर्शिता बढ़ेगी और पूंजी बाज़ारों में निवेशकों का विश्वास बढ़ेगा।

- **शैडो बैंकिंग को विनियमित करना**: शैडो बैंकिंग परिचालनों में, विशेष रूप से **NBFC, ब्रोकर्स और मार्जिन उधारदाताओं के बीच, व्यापक डेटा संग्रह** और पारदर्शिता को अनिवार्य बनाना है।
  - **भारत को यूरोपीय संघ** के समान **नियामक दृष्टिकोण अपनाना** चाहिये तथा सख्त निगरानी लागू करने से पहले आँकड़ों को आधार के रूप में उपयोग करना चाहिये।
- **एकीकृत वित्तीय विनियमन:** भारत को **निरीक्षण अंतराल और नियामक विसंगतियों** को दूर करने के लिये **RBI, SEBI, IRDAI और PFRDA के बीच सामंजस्यपूर्ण विनियमन** की आवश्यकता है।
  - विभिन्न वित्तीय क्षेत्रों में भिन्न **KYC मानदंड अक्षमताएँ** उत्पन्न करते हैं। एक एकीकृत ढाँचा नियामक दक्षता, पारदर्शिता और अनुपालन को बढ़ा सकता है।
- **NPA सॉल्यूशन में सुधार: एसोसिएट** की गुणवत्ता में सुधार के लिये, **NPA सॉल्यूशन को गति और अधिक कुशल** होना चाहिये।
  - **NCLT और DRT** की क्षमता को मज़बूत करने के साथ-साथ **AIBC को मज़बूत** करने के लिये समर्थन के साथ-साथ इक्विटी में भी बढ़ोतरी हो सकती है।
- **बीमा बाज़ार का पुनर्कल्पना:** निम्न आय वर्ग के लिये **सूक्ष्म आय वर्ग को बढ़ावा** देना तथा मध्यम आय वर्ग को प्रोत्साहन प्रदान करना।
  - दावा प्रक्रियाओं को सरल बनाना, पारदर्शिता बढ़ाना और समय पर निपटान सुनिश्चित करना, जिससे विश्वास कायम हो तथा बीमा कवरेज का विस्तार हो।
- **डिजिटल परिवर्तन और साइबर सुरक्षा को बढ़ावा देना:** जैसे-जैसे डिजिटल परिवर्तन की प्रक्रिया बढ़ती है, **साइबर सुरक्षा को मज़बूत** करना महत्त्वपूर्ण होता है। फाइनेंसियल इन्वेस्टमेंट को बेहतर **मार्केटप्लेस का पता लगाना** तथा स्टूडियो के लिये **स्ट्रॉन्ग सिक्योरिटी इन्वेस्टमेंट** को लागू कर निवेश करना चाहिये।
  - **RBI की Mulehunter.ai सबसे पहले** सुरक्षित और **डिजिटल बैंकिंग** की ओर कदम बढ़ाती है।

दृष्टि मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: भारत के BFSI क्षेत्र में वृद्धि के पीछे के मुख्य कारण क्या हैं? वित्तीय स्थिरता सामने और समावेशी विकास सुनिश्चित करने में इसके आगामी प्रमुख उद्घाटन का परीक्षण कीजिये।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQs)

प्रश्न. भारत में 'शहरी सहकारी बैंकों' के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. राज्य सरकारों द्वारा स्थापित स्थानीय मंडलों द्वारा उनका पर्यवेक्षण एवं विनियमन किया जाता है।
2. वे इक्विटी शेयर और अधिमान शेयर जारी कर सकते हैं।
3. उन्हें वर्ष 1966 में एक संशोधन के द्वारा बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 के कार्य-क्षेत्र में लाया गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर:(b)

प्रश्न. निम्नलिखित में से कौन भारत के सभी ATM को जोड़ता है?

(a) भारतीय बैंक एसोसिएशन
(b) राष्ट्रीय प्रतिभूति निक्षेप लिमिटेड (नेशनल सेक्यूरिटीज़ डिपोज़िटरी लिमिटेड)
(c) भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया)
(d) भारतीय रिज़र्व बैंक

उत्तर: (c)

?????

प्रश्न. प्रधानमंत्री जन-धन योजना (पी.एम.जे.डी.वाई.) बैंकरहितों को संस्थागत वित्त में लाने के लिये आवश्यक है। क्या आप सहमत हैं कि इससे भारतीय समाज के गरीब तबके के लोगों का वित्तीय समावेश होगा? अपने मत की पुष्टि के लिये तर्क प्रस्तुत कीजिये। (2016)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/revamping-india-s-bfsi-sector